Std.: 10th CBSE **Sub: Hindi**	Rathi's Aspire Academy Preparing You For Tomorrow **Pre-Board Set-I Solution**	**Date : 27/12/2022**

खंड 'अ'

वस्तुपरक/बहुविकल्पीय

अंक : 40

1. (क) *(i)* अपमान की दृष्टि से।
(ख) *(ii)* किसी की सलाह को स्वीकार करने की कला को।
(ग) *(iii)* गल्प के रूप में।
(घ) *(i)* सलाह को स्वीकारने में।
(ङ) *(ii)* कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।

2. (क) *(ii)* विकसित देश।
(ख) *(i)* वास्तविकता में
(ग) *(i)* वैज्ञानिक।
(घ) *(i)* अहंकार।
(ङ) *(iii)* III और IV

3. (क) *(ii)* सर्वनाम पदबंध
(ख) *(iv)* क्रिया विशेषण पदबंध
(ग) *(ii)* क्रिया पदबंध
(घ) *(iii)* संज्ञा पदबंध
(ङ) *(i)* विशेषण पदबंध

4. (क) *(iii)* भाई साहब द्वारा पढ़ाई का भयंकर चित्र खींचे जाने पर लेखक ने झटपट एक योजना तैयार की।
(ख) *(i)* मिश्र वाक्य
(ग) *(iii)* नृत्य आयोजन होने वाला है और इस बार हम उस में भाग लेना चाहते हैं।
(घ) *(i)* सरल वाक्य
(ङ) *(iii)* मिश्र वाक्य

5. (क) *(ii)* कांति से हीन —तत्पुरुष समास
(ख) *(iii)* देश की भक्ति—तत्पुरुष समास
(ग) *(iv)* दो पहरों का समूह—द्विगु समास
(घ) *(i)* असंभव—नत्र तत्पुरुष समास
(ङ) *(iv)* I और III

6. (क) *(iii)* आड़े हाथों लेना
(ख) *(i)* गाढ़ी कमाई
(ग) *(iii)* अंधे के हाथ बटेर लगना
(घ) *(i)* दांतों पसीना आना
(ङ) *(ii)* साए से भागना—डरकर छिपने का प्रयत्न करना
(च) *(iii)* आटे दाल का भाव मालूम होना

7. (क) *(i)* वह जवानी जो खून में नहीं नहाती
(ख) *(iv)* देश के लिए कुर्बान होना
(ग) *(iii)* देश पर कुर्बान होने के लिए तैयार रहना चाहिए
(घ) *(iv)* कर चले हम फिदा – कैफ़ी आज़मी
(ङ) *(IV)* III, IV

8. (क) *(iii)* जो समस्त संसार को एक सूत्र में बांधने का भाव करे।
(ख) *(iv)* जिसके हृदय में प्रेम का वास हो वही सच्चा ज्ञानी है।

9. (क) *(iii)* उसे तीन लाख सालाना वजीफा दिया गया
(ख) *(i)* उससे गवर्नर जनरल की शिकायत करने के लिए
(ग) *(iii)* वजीर अली के मन में
(घ) *(iii)* वकील ने उसे भला-बुरा सुनाया
(ङ) *(i)* कथन (A) सही है कारण (R) उसकी सही व्याख्या करता है।

10. (क) *(iii)* यह कथन बड़े भाई साहब के स्वभाव पर व्यंग्य कर रहा है।
(ख) *(iv)* II, IV

खंड 'ब'

वर्णनात्मक प्रश्न

(क) पाठ 'बड़े भाई साहब' में लेखक का स्वभाव अपने बड़े भाई से सर्वथा भिन्न दिखाया गया है। लेखक अपना अधिकांश समय खेलकूद में बिताते थे। पढ़ने में उनका बिल्कुल मन नहीं लगता था। मौका पाते ही मैदान में आकर कंकरियाँ उछालना, काग़ज की तितलियाँ उड़ाना, चारदीवारी पर चढ़कर कूदना घण्टों होता था, किन्तु एक घण्टे भी किताब खोलकर बैठना पहाड़ पर चढ़ने के समान कठिन लगता था। दूसरी ओर उनके बड़े भाई साहब बहुत अध्ययनशील (व्यंग्य) थे, सारा दिन किताबें खोलकर बैठे रहते थे। उनकी सहज बुद्धि बहुत तीव्र थी व उपदेश देने की कला में तो वे निपुण थे।

(ख) लेखक निदा फ़ाजली ने वक्त के साथ बदलती लोगों की मानसिकता, पर्यावरण के प्रति निष्ठुरता को तथा इसके दुष्प्रभावों को बखूबी दर्शाया है। मुम्बई से ग्वालियर के बीच पहले दूर तक जंगल हुआ करता था, वहाँ अब (लेखक ने बताया) बस्ती बन चुकी थी, जिसने पशु-पक्षियों को बेघर कर दिया था। इनमें से कुछ तो दूर चले गए हैं और कुछ ने आस-पास के घरों में ही डेरा डाल लिया है।

(ग) लेखक 'निदा फ़ाजली' का मानना है कि इस सम्पूर्ण धरती पर, प्रकृति पर सभी जीवधारियों का समान अधिकार है, किन्तु मनुष्य ने अपने बुद्धि-बल से प्रकृति पर अपना हक जमा लिया है, वह अपनी असीम इच्छाएँ व आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए प्रकृति के साथ छेड़छाड़ ही नहीं, उसे नष्ट करता रहता है। इच्छाएँ व जरूरतें बढ़ती ही जा रही हैं, मनुष्य दिन-पर-दिन स्वार्थी होता जा रहा है। किसी समय में सुलेमान जैसे लोग थे जो चींटी जैसे छोटे जीव का दर्द भी समझते थे, शेख अयाज के पिता जैसे लोग थे जो अनजाने में भी किसी को तकलीफ नहीं देना चाहते थे, नूह नामक पैगम्बर थे जो किसी पशु के दिल दुखने की आवाज भी सुन सकते थे। किसी समय में लेखक की माँ जैसे प्रकृति व अन्य जीव-जन्तुओं के प्रति प्रेम व सहानुभूति रखने वाले लोग थे, किन्तु आज हमें ऐसे लोग देखने को नहीं मिलते। लेखक की पत्नी की तरह हम केवल अपने आराम व सुख की परवाह करते हैं। अपने स्वार्थ के लिए किसी दूसरे को तकलीफ पहुँचाने में भी संकोच नहीं करते। अतः पाठ का शीर्षक 'अब कहाँ दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाले' पूरी तरह सार्थक है।

12. (क) मीरा कृष्ण के एकनिष्ठ प्रेम से अभिभूत थीं। उनकी सांसारिक इच्छाएँ समाप्त हो चुकी थीं, केवल यही कामना थी कि कृष्ण उन्हें अपनी दासी के रूप में स्वीकार कर लें अर्थात् उन्हें अपना लें। कृष्ण को उनके कर्त्तव्य याद दिलाते हुए वे कहती हैं कि जिस प्रकार कृष्ण ने द्रौपदी के वस्त्र बढ़ाकर उसकी लाज रखी थी, भक्त प्रह्लाद की सच्ची भक्ति को प्रमाणित किया था व डूबते हुए हाथी को बचाया था, उसी प्रकार वे मीरा की भक्ति, प्रेम को स्वीकार करके अपने लोकरक्षक रूप को, अपनी भक्त वत्सलता को सिद्ध करें।

(ख) हमारे पाठ्यक्रम की कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' हमें पर्वतीय क्षेत्र में प्रकृति के सुंदर नजारों को अपनी आँखों निरखने की अनुभूति देती है।

पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा ऋतु का आगमन बेहद खूबसूरत होता है। पल-पल में प्राकृतिक नजारे ऐसे बदलते हैं, मानो आँखों के सामने कोई फिल्म के दृश्य बदल रहे हों। बड़े-बड़े वृक्ष, पर्वत, तालाब, झरनों का सौंदर्य मन को लुभाता है। जब बादल इन्हें ढक लेते हैं तो ऐसा लगता है, मानो वे बादलों के पंख लगा कर कहीं उड़ गए हैं। वर्षा शुरु होने पर तो संपूर्ण दृश्य ऐसा गंभीर हो जाता है, जैसे भयानक वर्षा ने सब को भयभीत कर दिया हो। यह अलौकिक दृश्य स्वयं इंद्र देवता द्वारा खेला जा रहा कोई जादू का खेल-सा नजर आता है। इस प्रकार कवि सुमित्रानंदन पंत में पावस ऋतु को जीवंत बनाकर हमें रोमांचित कर दिया है।

(ग) विरासत में मिली वस्तुएं हमें अपने गौरवशाली इतिहास की याद दिलाती हैं या हमें भविष्य के लिए सचेत करती हैं। जिस तोप का वर्णन कवि 'वीरेन डंगवाल' ने किया है, वह अंग्रेजों की निशानी है। उसे धरोहर कहा गया है क्योंकि वह हमेशा हमें याद दिलाती रहेगी कि हमारे पूर्वजों की गलतियों के कारण पूरे देश को दारुण दुख झेलने पड़े थे। हमें किसी भी कीमत पर उस इतिहास को दोहराना नहीं है। यही कारण है

संभाल कर रखा गया है और समय-समय पर इसकी साफ- सफाई भी की जाती है भले ही यह निश्चित हो चुकी हो किंतु हमें अपने गौरव को बनाए रखने के लिए उकसाती है।

13. (क) जनसंख्या विस्फोट

जनसंख्या प्रत्येक देश की मानवीय सम्पदा होती है, किन्तु तभी तक जब तक वह नियन्त्रण में हो, अन्य संसाधनों के उचित अनुपात में हो, अन्यथा यही आर्थिक विकास में बाधा बन जाती है, सामाजिक समस्याओं की जड़ बन जाती है व वरदान की जगह अभिशाप-सी लगने लगती है। भारत में जिस तेजी से जनसंख्या में वृद्धि हुई, उसे 'जनसंख्या विस्फोट' नाम दिया गया। इसके प्रमुख कारण हैं छोटी उम्र में विवाह होना, अशिक्षा, अन्धविश्वास, लिंगभेद आदि। इस जनसंख्या विस्फोट के अनगिनत दुष्परिणाम सामने आये, जैसे—बेरोजगारी, प्राकृतिक शोषण, अपराधों में वृद्धि, गरीबी, आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में उथल-पुथल। जनसंख्या वृद्धि की एक समस्या अन्य अनेक समस्याओं को जन्म देती है। अत: इसे नियन्त्रित करने के प्रयास किए जा रहे हैं, जैसे—सरकार द्वारा लोगों में जागरूकता फैलाना, अनेक योजनाएँ बनाकर लिंग-भेद को मिटाना, शिक्षा के प्रति लोगों को सचेत करना, गर्भ निरोध के विभिन्न उपायों का प्रचार आदि। किन्तु दु:ख की बात है कि विशेष सुधार देखने में नहीं आया है। आशा है, हमारी युवा पीढ़ी इस समस्या के प्रति सचेत हो चुकी है और अगले दशकों में इसके सकारात्मक परिणाम अवश्य देखने को मिलेंगे।

अथवा

(ख) साहित्य समाज का दर्पण

प्रत्येक देश का अपना साहित्य होता है। वही देश की असली पहचान, संस्कृति को जीवित रखने का माध्यम, देश का गौरव और स्वाभिमान होता है। इस दृष्टि से देखें तो कह सकते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है, यानि साहित्यकार वही रचता है जो वह समाज में देखता है। किन्तु इसका दूसरा पहलू यह कहता है कि साहित्य समाज का निर्माता होता है। यानि हम अपने देश व समाज को जैसा देखना चाहते हैं, साहित्य के माध्यम से वह आदर्श रूप प्रस्तुत किया जाता है ताकि लोग उससे प्रेरित व प्रोत्साहित होकर तदनुरूप व्यवहार करें, अपने समाज को वैसा आदर्शवादी रूप देने की, सँवारने की कोशिश करें। यदि साहित्य केवल दर्पण का काम करेगा, तो उसका उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पायेगा। कलम में तो बहुत ताकत होती है। व्यक्ति, समाज व देश को जगाने व बदलने की, उचित मार्गदर्शन करने की क्षमता होती है। अत: साहित्य अपने इस उद्देश्य को पूर्ण करे, तभी वह सार्थक हो सकता है।

अथवा

(ग) गुरु-शिष्य सम्बन्ध

गुरु को भारत में सदा से ही अत्यधिक सम्माननीय माना गया है। यहाँ तक कि अनेक सन्त-कवियों ने तो गुरु को ईश्वर का या उससे भी श्रेष्ठ दर्जा दे दिया है। किन्तु केवल गुरु का योग्य या शिक्षा देने में इच्छुक होना पर्याप्त नहीं है, शिष्य को भी शिक्षा प्राप्ति के लिए उतना ही उत्सुक व योग्य होना आवश्यक है और इन दोनों से भी ऊपर है गुरु व शिष्य के सम्बन्धों का मधुर, पवित्र व विश्वसनीय होना। गुरु नि:स्वार्थ भाव से, दृढ़ता व लगन से शिक्षा दे व शिष्य पूर्ण निष्ठा, विश्वास, मेहनत व लगन से शिक्षा ग्रहण करे, तभी यह प्रक्रिया सफल हो सकती है। वर्तमान स्थिति इस सम्बन्ध में सन्तोषजनक नहीं है। गुरु वेतनभोगी हो गये हैं और शिष्य अनुशासनहीन, हठी व आचरण हीन होते जा रहे हैं। ऐसे में शिक्षा प्रक्रिया अपना उद्देश्य पूर्ण नहीं कर पाती, बल्कि अनेक प्रकार के अपराधों को जन्म देती है। आवश्यकता इस बात की है कि अध्यापक नि:स्वार्थ भाव से, पूरी तन्मयता से अपना ज्ञान व अनुभव छात्रों तक पहुँचायें व छात्र सम्मानपूर्वक ज्ञान ग्रहण करने में आनन्द लें, तभी यह ज्ञानयज्ञ सफल हो पायेगा।

14. प्रधानाचार्या महोदया,
क ख ग विद्यालय,
नई दिल्ली।

***विषय**—आर्थिक सहायता हेतु प्रार्थना।*

आदरणीय महोदया,

मैं आपके विद्यालय की कक्षा दसवीं का छात्र हूँ। नर्सरी कक्षा से नियमित रूप से इसी विद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर रहा हूँ व प्रतिवर्ष अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होता हूँ। समय-समय पर खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेकर मैंने विद्यालय का नाम भी रोशन किया है।

महोदया, गत वर्ष से हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं चल रही है। पिताजी मेरी पढ़ाई का व

विद्यालय के अन्य शुल्क चुकाने में समर्थ नहीं हो पा रहे हैं। मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस वर्ष मेरा शुल्क माफ कर दीजिए ताकि मैं आपके ही विद्यालय में शिक्षा जारी रख सकूँ।

मुझे आशा है कि आप मेरी प्रार्थना पर विचार करेंगी व मुझे इस रूप में आर्थिक सहायता देकर अनुग्रहीत करेंगी।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी छात्र,

अ ब स

दिनांक......................

अथवा

परीक्षा भवन,

नई दिल्ली।

दिनांक...................

थानाध्यक्ष महोदय,

विकासपुरी थाना,

नई दिल्ली।

विषय— *संगीन अपराध की सूचना।*

आदरणीय महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं विकासपुरी क्षेत्र का एक जिम्मेदार नागरिक हूँ व अपने क्षेत्र में गत सप्ताह हुए एक संगीन अपराध की सूचना आपको देना चाहता हूँ। दिनांक 30 मार्च को, सायं 7 बजे के आस-पास मैं बाजार से आ रहा था। अचानक देखा कि एक मोटरसाइकिल पर सवार दो युवकों ने मेरे कुछ आगे चल रही दो महिलाओं से पहले तो छेड़छाड़ की, जब वे घबरा गयीं तो उनका पर्स व गहने लेकर फरार हो गये। वे दोनों महिलाएँ इतना घबरा गयीं और लज्जित महसूस करने लगीं कि उन्होंने शायद पुलिस को सूचना भी नहीं दी। किन्तु मुझे लगता है कि इस तरह तो अपराधियों की हिम्मत बढ़ती जायेगी।

आपको जल्दी ही इस तरह की घटनाओं पर रोक लगाने के लिए सख्त कदम उठाने चाहिए। यदि जनता सुरक्षित ही न हो तो नियम-कानूनों का क्या लाभ?

आशा है, आप जल्द ही उचित कदम उठायेंगे।

धन्यवाद

भवदीय,

क ख ग

15.

संजीवनी सोसायटी

सूचना

दिनांक................

'स्वच्छ रहें, स्वस्थ रहें'

सोसायटी के सभी सदस्यों से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र में स्वच्छता बनाए रखने में मदद करें। वातावरण को स्वच्छ रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। यदि सोसायटी में कोई सदस्य गन्दगी फैलाता हुआ नजर आया तो भारी जुर्माने के रूप में दण्ड भुगतना पड़ेगा।

धन्यवाद।

नवीन शर्मा

सचिव

अथवा

रामकृष्ण उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

सूचना

दिनांक.................

अनुशासन की अपील

विद्यालय में अनुशासन सर्वोपरि है। सभी अध्यापकों व छात्रों की जिम्मेदारी व कर्त्तव्य है कि विद्यालय में अनुशासित वातावरण बनाए रखने में सहयोग दें। अनुशासन भंग करते हुए पाये गये छात्रों को सख्त सजा दी जायेगी व विद्यालय से निलम्बित किया जा सकता है। सभी नियमों को कृपया अपनी डायरी में पढ़ें।

धन्यवाद।

प्रधानाचार्या

16.

आध्यात्मिक चर्चा

यदि आप अध्यात्म में रुचि रखते हैं;

यदि आप जीवन-जगत की सच्चाई को जानना चाहते हैं;

यदि आप हमेशा खुश रहना व खुशियाँ बाँटना चाहते हैं;

तो आइए, 26 मई, प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक होने वाली इस आध्यात्मिक कार्यशाला में भाग लीजिए।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें — 9810203546

अथवा

होली के प्राकृतिक रंग		
पूर्ण प्राकृतिक	होली के रंग, जीवन में भरें उमंग। खेलें सब मिलकर संग, इनकी खुशबू कर देगी दंग। आइए, आजमाइए, ले जाइए.......... चार रंगों के साथ, एक पिचकारी मुफ्त	विभिन्न रंगों में उपलब्ध

17. लालच बुरी बला है

केशव को नए-नए, महँगे पेन खरीदने का बहुत शौक था। जब भी किसी और बच्चे के पास नया महँगा पेन देखता तो उसका जी ललचा जाता था। उसने कई बार मम्मी से महँगा पेन लेने की जिद करी और मम्मी ने उसे समझाया कि पेन लिखने का ही काम करता है, उसके लिए उतने ही पैसे खर्च करो कि ठीक तरह से लिख पाओ। बहुत महँगा पेन खरीदने का कोई लाभ नहीं है। वह पेन खरीद तो नहीं पाया पर उसके मन में पेन पाने की लालसा बनी रही।

एक दिन उसका सहपाठी प्रकाश अपना महँगा पेन बेंच पर ही छोड़ कर पानी पीने चला गया। केशव की नजर कई दिन से उस पेन पर थी। उसने इधर-उधर नजर घुमाई और चुपचाप उठा कर अपने बैग में रख लिया जब प्रखर लौटकर आया तो काम करने के लिए वह अपना पेन ढूँढ़ने लगा। बैंच के नीचे इधर-उधर सब जगह देखा फिर उसने केशव से पूछा क्या उसका पेन देखा है। केशव ने साफ इनकार कर दिया। क्योंकि वह पेन बहुत महँगा था तो प्रखर ने अध्यापिका को जाकर बोल दिया। अब केशव घबरा गया। अध्यापिका ने सभी बच्चों को कहा कि अगर गलती से भी किसी के पास वह आ गया है तो उसे वापस करो। सब अपने आस-पास देखने लगे। एक बार तो केशव के मन में आया कि वह प्रखर को दे दे, पर उसके लालच ने उसे रोक लिया। प्रखर ने केशव की ओर देखा, अध्यापिका को कह दिया कि कोई बात नहीं पेन मिल जाएगा।

केशव मन ही मन अपने आप को कोसने लगा कि उसने ऐसा क्यों किया। घर जाकर भी वह उदास रहा। अगले दिन जाते ही प्रखर से अकेले में माफी माँगी और उसका पैन उसे लौटा दिया। प्रखर बोला मैं जानता था कि तुम मेरा पेन जरूर लौटा दोगे और देखो मैं तुम्हारे लिए वैसा ही पेन लेकर आया हूँ। केशव ने धन्यवाद कहा किन्तु पेन लेने से इनकार कर दिया।

अब वह समझ गया था कि माँ ठीक ही कहती थी महँगा पेन लेने की कोई आवश्यकता नहीं है और इस घटना से उसने सबक ले लिया कि 'लालच बुरी बला है'।

अथवा

आजादी

जब उसकी आँख खुली तो सूरज ऊपर चढ़ आया था। वह घबरा गया, आज उसकी परीक्षा थी। कॉलेज पहुँचने में देर न हो जाए। नहाने का समय नहीं था। यहाँ तक कि नाश्ता करने का भी समय नहीं बचा। कैंटीन वाले भैया ने आवाज दी "भैया, दूध तो पीते जाओ"। पर उसके पास समय कहाँ था। किसी तरह पेपर देने बैठा, भूख प्यास सता रही थी, पेपर के बीच में ही कुछ चक्कर से भी आने लगे पर पीने के लिए पानी तक नहीं था। पेपर अच्छा नहीं हुआ।

ऐसा पहली बार नहीं हुआ था। जब से वह पीजी में रहने आया था यह चौथी बार यही परिस्थिति उसके सामने आई थी। जब वह घर पर था माँ उसे उठाने के लिए आवाज लगाती या नाश्ता करने पर जोर देती तो वह झुंझला जाता था और पीजी में रहने की जिद करता था। घर पर रहते हुए उसका स्वभाव दिन-पर-दिन चिड़चिड़ा होता जा रहा था। आखिर उसकी जिद के आगे सबने हार मान ली और शायद यह भी सोचा कि कुछ दिन पीजी में रह कर देख लेगा तो फर्क अपने आप समझ आ जाएगा।

अब वही हो रहा था। न वहाँ अच्छा खाने को मिलता था, न ही खाने के लिए समय मिलता था। बे-समय सोना, टाइम पर न उठ पाना इस सब का असर उसकी पढ़ाई पर भी पड़ा रहा था। जिस आज़ादी की चाह में घर से निकला था वही आज़ादी अब उसे बुरी लगने लगी थी। वह समझ गया था कि अपनों की पाबंदियाँ हमारे लिए बंधन नहीं होती बल्कि आगे बढ़ने के लिए सहारा होती हैं। उनका कुछ कहना टोकना नहीं होता बल्कि समझाना होता है जो हमारे चरित्र-निर्माण और स्वास्थ्य के लिए बेहद जरूरी है। परीक्षाएँ खत्म होते ही उसने तुरंत पीजी छोड़कर घर लौटने का फैसला माँ को सुना दिया।

18. प्राप्तकर्ता—sksharma@gmail.com
भेजने वाला—saharal.com

दिनांक......................

समय......................

विषय—सामान में खराबी की शिकायत।

श्रीमान/श्रीमती जी,

मैं सार्थक पश्चिमी दिल्ली का निवासी, आपकी सहारा कंपनी का नियमित खरीदार रहा हूँ। मेरे पते पर आपके यहाँ से कोई न कोई उत्पाद आता रहता है, किंतु इस बार जो सामान आपने भेजा, वह अत्यधिक निराशाजनक था। बहुत से उत्पाद खराब थे और कुछ वस्तुएँ मेरी मांग के अनुसार नहीं थीं। आपकी जानी मानी-कंपनी से ऐसा व्यापार की आशा बिल्कुल नहीं है। आपसे प्रार्थना है कि आप उस सामान को जल्द से जल्द बदल कर उचित सामान भेजें ताकि आपके उत्पादन के प्रति हमारा विश्वास बना रह सके।

धन्यवाद
सार्थक
अ-205, विकास पुरी, नई दिल्ली।